ए बिरिख तो या बिध का, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़हीं, ए हांसी या बिध होए।। २२ ।।

यह इस तरह का वृक्ष है जिसका फल सभी चाहते हैं और बार-बार लेने को दौड़ते हैं, जिससे हांसी (हंसी) होती है।

बंध न खुले बिना बंधे, जो खोले फेर फेर।
ए बुत कुदरत देख के, गैयां आप खसम बिसर।। २३ ।।

जब बन्धन बंधे ही नहीं तो वह खुलें कैसे? फिर भी बार-बार खोलने का प्रयत्न करते हैं। इस तरह संसार के जीवों को देखकर, हे मोमिनो! तुम अपने धनी को भूल गए हो।

अब याद करो खसम को, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराए इमामसों, सुफल करूं अवतार।। २४ ।।

अब अपने खसम (पति, स्वामी) को याद करो और माया को छोड़ो। अब मैं तुम्हारी पहचान इमाम मेंहदी से करवा देती हूं और अपना आना सार्थक करती हूं।

वतन खसम देखाए के, और अपनी असल पेहेचान।
इमाम नूर रोसन करके, उड़ाए देऊं उनमान।। २५ ।।

हे मोमिनो! तुम्हें घर (परमधाम) और धनी श्री राजजी महाराज को दिखा करके अपनी असल पहचान करा देती हूं तथा इमाम मेंहदी के ज्ञान का प्रकाश करके तुम्हारी अटकल (अनुमान) समाप्त कर देती हूं।

हकें कह्या अरवाहों उतरते, हम बैठे बीच लाहूत।
तुम अर्स भूलो आप हमको, देखो नहीं बीच नासूत।। २६ ।।

परमधाम से आते समय हक (श्री राजजी महाराज) ने अपनी आत्माओं से कहा था कि मैं परमधाम में बैठा हूं। तुम खेल में जाकर अपने घर को, अपने आप को और मुझे भूल जाओगे।

हम अर्स रूहें आसिक, हक मासूक भूलें क्यों कर।
क्या चले खेल फरेब का, तुम आगूं देत हो खबर।। २७ ।।

हम परमधाम की रूहें श्री राजजी महाराज की आशिक हैं तथा श्री राजजी महाराज हमारे माशूक हैं। भला उनको क्यों भूलेंगे? हे धाम धनी! आप पहले से ही हमें सावचेत (सावधान) कर रहे हो, तो फिर झूठा खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

ए जिमी हांसी देख के, मोमिन हूजो सावचेत।
इमाम को सुख महामती, तुमको जगाए के देत।। २८ ।।

हे मोमिनो! इस हांसी (हंसी) के खेल को देखकर सावचेत (सावधान) हो जाओ। इमाम मेंहदी के सुख को मैं तुम्हें जगाकर देती हूं।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४६४ ।।

सनन्ध–कलमें की

ए जो फरेब तुम देखिया, और देखे फरेब के मजहब।
ए तो सब तुम समझे, गुझ जाहेर करहूं अब।। १ ।।

हे मेरे मोमिनो! तुमने झूठे संसार को तथा यहां के झूठे धर्मों (मजहबों) को देखा और उनकी हकीकत तुमने समझ ली है। अब रहस्य की बातें बताती हूं।

Nijanand App

ऐसा था फरेब अंधेर का, कहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े नजर देखते, तामें आईं रूहें जमात।। २ ।।

यह ऐसा घोर अन्धेरा है जहां अपने हाथ को हाथ भी दिखाई नहीं देते। इसे देखते ही माया के बन्धन में पड़ जाते हैं। ऐसे खेल में हमारी रूहों की जमात आई है।

खेल देखन कारने, करी उमेद एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखों नहीं संदेह।। ३ ।।

हे मोमिनो! तुमने खेल देखने की चाहना की और तुम्हारे लिए ही यह खेल बनाया, इसलिए तुम्हारे अन्दर इसका कोई संशय नहीं रहने दूंगी।

ए खेल किया रूहों वास्ते,ए जो मोमिन आइयां जेह।
खेल देख जाए वतन, बातें करसीं एह।। ४ ।।

यह खेल रूहों के लिए बनाया है जिसे देखने के लिए रूहें आई हैं। खेल देखकर यह अपने घर वापस जाएंगी और यहां की बातें करेंगी।

मोमिन बातें वतन की, देऊंगी आगे बताए।
पर अब कहूं नेक दीन की, जो रसूलें राह चलाए।। ५ ।।

हे मोमिनो! घर की बातें आगे बताऊंगी। अब कुछ रसूल साहब के चलाए हुए धर्म की बातें बताऊंगी।

जो अलहा किनहूं न लह्या, मैं तिनका कासद।
अर्स रूहों वास्ते आइया, मेरे हाथ कागद।। ६ ।।

रसूल साहब ने कहा था कि अल्लाह को किसी ने नहीं पहचाना। मैं उनका कासिद (पत्रवाहक, पोस्टमैन) बनकर आया हूं। मैं अर्श की रूहों के वास्ते आया हूं और मेरे हाथ में उनका पत्र है।

कह्या रसूलें जाहेर, खबर खुद की मुझ।
कोई और होवे तो पोहोंचही, अब जाहेर करहों गुझ।। ७ ।।

रसूल साहब ने स्पष्ट कहा कि मैं अल्लाह को अच्छी तरह जानता हूं। वहां का और कोई हो, तो पहुंच सकता है। अब छिपे रहस्यों को मैं जाहिर करता हूं।

जो चौदे तबकों में नहीं, वार न काहूं पार।
सो अलहा हम आवसी, खातिर सोहागिन नार।। ८ ।।

जो अल्लाह चौदह लोकों में कहीं नहीं है और जिसकी खबर (ज्ञान) किसी के पास नहीं है, वह हम रूहों (मोमिनों) के वास्ते खेल में आएगा।

ले फुरमान जो हाथ में, केहेलाया मैं रसूल।
ए देखो अरवाहें अर्स की, जिन कोई जावें भूल।। ९ ।।

मैं अल्लाह का फरमान हाथ में लेकर आया हूं, इसलिए रसूल कहलाता हूं। हे मेरे धाम के मोमिनो! अब इस बात को नहीं भूलना।

काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान।। १० ।।

जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टि की पहचान वही करेंगे जिनके पास कुरान की हकीकत और मारफत के गुझ (गुह्य) मायने खोलने का ज्ञान होगा।

Nijanand App

अबलों बेवरा ना हुआ, कई चली गई जहान।
एक दीन जब होवहीं, तब होसी सबों पेहेचान।। ११ ।।

कई संसार बने और मिटे, परन्तु अभी तक इसका ब्योरा नहीं हुआ था (काफिर, मुस्लिम और मोमिन की हकीकत नहीं खुली थी)। जब एक दीन हो जाएगा तब सबको इस बात की पहचान हो जाएगी।

जो माएने न पाए बातून, तो हुए जुदे जुदे मांहें दीन।
फिरके हुए तिहत्तर, एक नाजीमें कह्या आकीन।। १२ ।।

बातूनी भेद न खुलने के कारण दीन के तिहत्तर फिरके (टुकड़े) हुए। जिनमें से एक मर्द मोमिनों का है जिनका ईमान पक्का है।

और बहत्तर नारी कहे, करी एक को हकें हिदायत।
कुरान माजजा नबी नबुवत, सो नाजी करसी साबित।। १३ ।।

और बहत्तर नारी फिरके कहे हैं (दोजखी)। एक को खुद हक ने हिदायत की है। यही नाजी फिरका कुरान के रहस्य को खोलेगा तथा पैगम्बर की पैगम्बरी सिद्ध करेगा (यही ब्रह्मसृष्टि की पहचान होगी)।

सो साबित तब होवहीं, जब सब होवे दीन एक।
पेहेले कह्या रसूल ने, एही उमत नाजी नेक।। १४ ।।

यह सब बातें तब सिद्ध होंगी जब सब दुनियां का धर्म एक हो जाएगा। रसूल साहब ने पहले से ही कहा था कि यही नाजी फिरका होगा जो खुदा की उम्मत होगी।

सब कोई बुजरक कहावते, आप अपने मजहब।
तिन सबों समझावहीं, एक दीन होसी तब।। १५ ।।

यही नाजी फिरका सभी धर्म के अगुओं (महाराज, महन्त, पीर, इत्यादि) को समझाएगा जो अपने-अपने धर्मों के अगुए बनकर बैठे थे। तब एक धर्म होगा।

झूठ सबे उड़ जाएसी, ना चले तिन बखत।
हक हादी के प्रताप थें, क्यों रेहेवे गफलत।। १६ ।।

उस समय सभी झूठे धर्म जो निराकार तक हैं, समाप्त हो जाएंगे। श्री राज श्यामाजी (इमाम मेंहदी) की कृपा से किसी का झूठ नहीं रह जाएगा।

तब लों रसमें लरत हैं, जब लों है उरझन।
रूहअल्ला कुंजी ल्याइया, तब जोरा न चलसी किन।। १७ ।।

कर्मकाण्ड और रस्मों रिवाज के झगड़ों की उलझनें तब तक चलेंगी, जब तक रूह अल्लाह कुंजी (तारतम ज्ञान) लाकर कुरान के रहस्यों को नहीं खोल देते। फिर किसी का जोर नहीं चलेगा।

जब सांच उठ खड़ा हुआ, तब कुफर रेहेवे क्यों कर।
जोलों कायम दिन ऊग्या नहीं, है तोलों रात कुफर।। १८ ।।

जब सत के ज्ञान का पता चल जाएगा तब झूठ कैसे टिकेगा? तारतम वाणी से जब तक उजाला नहीं हो जाता, तब तक ही यह फरेब और झूठ की रात है।

ए खेल हुआ जिन खातिर, सो गए खेल में मिल।
जब जाहेर साहेब हुआ, तब सबों नजर आवे दिल।। १९ ।।

यह खेल जिन मोमिनों के वास्ते हुआ है, वह सब खुद ही खेल में मिल गए हैं। जब तारतम वाणी से उनको अपने धनी की पहचान होगी, तब सब कुछ उनको दिखने लगेगा।

Nijanand App

महंमद पेहेलें आए के, बरसाया हक का नूर।
कई विध करी मेहेरबानगी, पर किने ना किया सहूर।। २० ।।

रसूल साहब ने पहले आकर के कुरान में हक के नूर का बयान किया और तरह-तरह की मेहरबानी की, परन्तु उस समय के मुसलमानों ने उन्हें कुछ भी नहीं समझा।

ए सहूर तो करे, जो होए अर्स अरवाहें।
जिन उमत के खातिर, आवसी इत खुदाए।। २१ ।।

यदि उस समय परमधाम की आत्माएं होतीं, तो वह उनको समझतीं। उन्हीं रूहों के वास्ते आखिर में खुदा आएगा, ऐसा रसूल साहब ने फरमाया।

जो अर्स रूहें आईं होती, तो काहे को कौल करत।
सो कह्या पीछे आवसी, ए सोई लेसी हकीकत।। २२ ।।

यदि अर्श की रूहें उस समय आई होतीं तो खुदा आने का वायदा न करते, इसलिए कहा कि रूहें पीछे आएंगी और वही इस हकीकत के ज्ञान को लेंगी।

अर्स रूहें होए सो मानियो, अंदर आन आकीन।
ए कलमा जो समझहीं, सोई महंमद दीन।। २३ ।।

जो परमधाम की रूहें हों, तो ईमान से मेरी बात को मानना। इस कलमे के जो अर्थ को समझेगा, वही सच्चा मुहम्मद के दीन को मानने वाला होगा।

ए कलमा मुख लाखों कहे, पर माएने न समझे कोए।
इन कलमें मगज सो समझहीं, जो अर्स अजीम की होए।। २४ ।।

लाखों लोग अपने मुख से कलमा कहते हैं, पर उसके अर्थ को नहीं समझते। जो अर्श अजीम का होगा, वही इस कलमे की हकीकत के मायने को समझेगा।

जो लों रेहेमान न जाहेर, रहो बंदे बाब पकर।
मैं हुकम छोड़ चलसी, फेर आवसी भेले आखिर।। २५ ।।

रसूल साहब ने कहा कि जब तक इमाम मेंहदी साहब जाहिर नहीं होते, तब तक मेरी हिदायतों के अनुसार चलो। मैं अभी इस हुकम को छोड़कर चला जाऊंगा और फिर इमाम मेंहदी साहब के साथ आऊंगा।

एक ए भी रसूलें कह्या, करी आगे की सरत।
साथ आवसी इमाम के, रूह मोमिन बड़ी मत।। २६ ।।

आगे आने के लिए एक बात रसूल साहब ने यह भी कही कि इमाम मेंहदी के साथ बड़ी अक्ल के मालिक रूह मोमिन भी आएंगे।

नूर मत जाहेर होएसी, तब जानो हुई आखिर।
तब मौला हम आवसी, इन मोमिनों की खातिर।। २७ ।।

जब तारतम ज्ञान (असराफील सूर फूकें) जाहिर हो जाए तब समझना कि आखिरत का वक्त आ गया है। उस समय मैं अल्लाह तआला के साथ मोमिनों के वास्ते आऊंगा।

Nijanand App

इत कजा जो करने बैठसी, तब हम काजी संग।
वरन बदलसी दुनियां, पर ए दीन कायम रंग।। २८ ।।

खुदा यहां सबका इन्साफ करने बैठेगा। मैं भी उनके साथ रहूंगा। सब दुनियां उस समय अपने धर्मों को छोड़कर एक खुदा के एक दीन के रंग में रंग जाएगी।

इमाम इत आवसी, सो भी मोमिनों के कारन।
देसी सुख मोमिन को, कजा होसी सबन।। २९ ।।

इमाम मेंहदी यहां मोमिनों के वास्ते आएंगे और वह मोमिनों को घर का सुख देंगे। बाकी दुनियां का इन्साफ कर बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

एता भी रसूलें कह्या, मोमिनों में आकीन।
बिना आकीन सब उड़सी, एक रेहेसी हमारा दीन।। ३० ।।

रसूल साहब ने यह भी कहा कि पक्का यकीन केवल मोमिनों में ही होगा। बिना यकीन वाले सब समाप्त हो जाएंगे। एक हमारा ही धर्म रहेगा।

जिन सिर लई बात रसूल की, कदम पर धरे कदम।
इन कलमें के हक से, न्यारा नहीं खसम।। ३१ ।।

जिन्होंने रसूल साहब की इस बात को माना और उनके बताए रास्ते पर चले, उनको इन कलमों के वचनों से हक की पहचान हो जाएगी। खुदा उनसे न्यारा (अलग) नहीं होगा।

जिन ए कलमा हक किया, मैं तिनका जामिन।
सो आपे अपने दिल में, साख जो देसी तिन।। ३२ ।।

जिसने इस कलमे को सच्चाई से लिया (समझा), मैं उनका जामिन (जमानतदार) हूं। उनको अपने दिल में कलमा ही गवाही देगा।

इन कलमें के माएने, लेकर भरसी पाए।
तिन मोमिन को खसम, सुख जो देसी ताए।। ३३ ।।

जो इस कलमे के अर्थ लेकर रहनी में आएगा उन मोमिनों को खुदा का सुख मिलेगा।

कहा कहूं इन कलमें की, मोमिनों में पेहेचान।
जब ए कलमा पसरया, तब साफ हुई सब जहान।। ३४ ।।

मोमिनों को इस कलमे की पूरी पहचान होगी। जब यह कलमा फैलेगा तो सारे संसार के संशय मिट जाएंगे।

जिन ए मेरा कलमा, लिया न मांहें बाहेर।
सो दुनियां आखिर दिनों, जलसी आग जाहेर।। ३५ ।।

जिसने मेरे कलमे को किसी भी तरह से नहीं लिया, ऐसे दुनियां वाले आखिरत को दोजख (पश्चाताप) की आग में जलेंगे।

तब ए होसी आजिज, और मौला तो मेहेरबान।
तब लेसी सबों को भिस्त में, देकर अपनों ईमान।। ३६ ।।

तब यह दुनियां वाले लाचार हो जाएंगे। मौला (प्राणनाथ) तो मेहरबान हैं ही, वह अपना ईमान देकर उनको भी बहिश्तों में कायम करेंगे।

Nijanand App

कछुक करके आकीन, कलमा सुनसी कान।
तिनभी सिर कजा समें, लगसी जाए आसमान।। ३७ ।।

जिन्होंने कुछ भी यकीन लेकर कलमे को कान से सुना है, उनका सिर भी कजा (इन्साफ) के दिन ऊंचा होगा।

एह बात तेहेकीक है, मोमिनों दिल साबित।
सब्द जो सारे मुझ पें, एक जरा नहीं असत।। ३८ ।।

यह बात सत्य है कि मोमिनों के दिल में पक्का यकीन होगा। जो मैं कह रहा हूं उनमें से एक शब्द भी झूठा नहीं होगा।

देखन मोमिन खातिर, रचिया खेल सुभान।
अब मोमिन क्यों भूलहीं, पाई हकीकत फुरमान।। ३९ ।।

मोमिनों को खेल दिखाने के लिए ही खेल बनाया है। अब मोमिन कुरान की हकीकत का ज्ञान पाकर क्यों भूलेंगे?

जो सबों को अगम, सो सब रसूल नजर।
तो रसूल मुसलिम को, फिरे सों फुरमाए कर।। ४० ।।

सारे संसार को जिस पारब्रह्म की पहचान नहीं है, वह रसूल साहब की नजर में हैं, इसीलिए जिनका धर्म पर ईमान है, उनको हिदायत (आदेश, हुकम) देकर वापस चले गए।

॥ प्रकरण ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ ५०४ ॥

सनन्ध–फुरमान की

फुरमान ल्याया जो रसूल, पर समझया नाहीं कोए।
जिन खातिर ले आइया, ए समझेगी रूह सोए।। १ ।।

रसूल साहब जो कुरान का ज्ञान लाए उसे कोई नहीं समझता। इसको परमधाम के मोमिन ही समझेंगे जिनके वास्ते कुरान आया है।

कछुक नबिऐं जाहेर किए, ए जो बंदगी सरियान।
केतेक हरफ रखे गुझ, सो करसी मेंहेदी बयान।। २ ।।

नबी (रसूल साहब) ने नब्बे हजार हरफ सुने थे। उनमें से शरीयत की बन्दगी के जाहिर किए। हकीकत के हरफ को छिपाकर रखा और कहा कि इमाम मेंहदी जब आएंगे, वही इसके मायने खोलेंगे।

और भी केतेक सुने रसूलें, पर सो चढ़े नहीं फुरमान।
सो मेंहेदी अब खोलसी, इमाम एही पेहेचान।। ३ ।।

मारफत के सुने शब्द कुरान में नहीं लिखे। उनको इमाम मेंहदी आकर खोलेंगे। यही इमाम मेंहदी की पहचान होगी।

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर।। ४ ।।

कुरान के अर्थ दूसरा और कोई खोल नहीं सकता। रसूल साहब ने पहले से कह दिया था कि इमाम मेंहदी के द्वारा कुरान के छिपे भेदों के रहस्य सब ठिकाने (स्थान) जाहिर होंगे।

Nijanand App